Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में स्त्री चेतना का विकास

सुमन बाला
शोधार्थी, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय
Email: sumanbala20781@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171113
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 84-86
November. 2025
Submitted: 16 Oct. 2025
Revised: 26 Oct. 2025
Accepted: 10 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

शोध सार

हिंदी साहित्य में बीसवीं शताब्दी के उतरार्ध में स्त्री विमर्श एक सशक्त विचारधारा के रूप में उभरा / पुरुष प्रधान भारतीय समाज में स्त्री को परंपरागत रुप से गृहस्थ जीवन जीने और पारिवारिक दायित्वों को निभाने तक सिमित रखा गया / आधुनिक लेखिकाओं ने अपने साहित्य में स्त्री के अस्तित्व ,उसकी स्वतंत्रता ,संवेदना और आत्मनिर्णय की आवाज बुलंद की / इसी स्त्री चेतना के विकास में चित्रा मुद्गल का विशेष योगदान रहा है / उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री को दया , करुणा की मूर्ति के रूप में चित्रित करने के साथ - साथ संघर्षशील ,आत्मसजग और निर्णय लेने में सक्षम व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है / इनकी रचनाओ में स्त्री अपने अस्तित्व की पहचान के लिए संघर्षरत और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर दिखाई देती है / चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में स्त्री विमर्श केवल देह या मुक्ति तक सिमित नही रहा बल्कि यह स्त्री की मानसिक मुक्ति पर भी बल देता है / उसके अनुसार स्त्री मुक्ति उसकी मानसिक स्वतंत्रता और अस्तित्व की पहचान से जुडी है इसीलिए उसके उपन्यासों मे नारी चेतना का विकास केवल सामाजिक प्रतिरोध ही नहीं बल्कि अंतरचेतना का विस्तार है जो स्त्री को अपने अस्तित्व ,निर्णय लेने की क्षमता और अस्मिता के प्रति जागरूक बनता है।

मूल शब्द: *स्त्री विमर्श, स्त्री चेतना, अस्तित्व, स्वतंत्रता, मुक्ति, आत्मनिर्णय, आत्मसजग, संघर्षशील, मानसिक, अंतरचेतना, अस्मिता, यौन शोषण, कोख, बाजारीकरण*

प्रस्तावना

10 दिसम्बर 1944 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के निहाली खेडा नमक गाँव के एक संपन्न एवं सामंती परिवार में जन्म लेने वाली चित्रा मुद्गल का बचपन सामन्ती परिवेश में व्यतीत हुआ। पिता जी के साथ अनेक स्थानों पर रहने के कारण उन्हें विभिन्न वर्गों और समाज के लोगों के जीवन का निकट अनुभव मिला जो उसकी सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टी को व्यापक और संवेदनशील बनता है।1964 में अपनी साहित्यिक यात्रा प्रारभ कर कहानी, उपन्यास, निबंध, कविता, बालसाहित्य आदि सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। इनके प्रमुख उपन्यासों जैसे कि माधवी, एक जमीन अपनी, कन्नागी, गिलिगडु, आवां, दि क्रूसेड आदि इनमें आवां सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास है। आवाँ उपन्यास पर व्यास सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में स्त्री चेतना, सामाजिक अन्याय, यौन शोषण, कोख के व्यवसायीकरण जैसे ज्वलंत विषयों को उठाया गया है। चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यासों में स्त्री की समस्याओं का चित्रण करते हुए उनके संघर्ष, आत्मनिर्णय की चेतना, अस्तित्व आदि को रेखांकित किया है। यही चेतन उनके उपन्यासों की केंद्रीय शक्ति है। "किसी भी उपन्यासकार द्वारा उपन्यास के रचना में परिवर्तित होते समय तीन बात महत्वपूर्ण होती है जिससे प्रेरित होकर वह अपनी कृति का सृजन करता है। पहली बात यह है कि मुझे सामाजिक परिवेश में वह रहता है वहां के विशेष घटनाओं का उनकी चेतना पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा हो। दूसरी बात है रचनाकार संपर्क में आए हुए कुछ विशेष पत्रों से प्रभावित होकर उन्हें अपनी रचना में रुपायित करता है। अतः उपन्यास में जो चरित्र स्पष्ट होते हैं वह रचनाकार के व्यक्तित्व एक रुचि के अनुकूल ही तो होती है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
सुमन बाला, शोधार्थी, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय

How to cite this article:
बाला, . सुमन . (2025). चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में स्त्री चेतना का विकास. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 84–86. https://doi.org/10.5281/zenodo.17875468

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17875468
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

तीसरी बात है-कलाकार अपने जीवन में पारिवारिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, साहित्यिक आदि से उत्पन्न समस्याओं से जूझता रहता है। तब उसकी भावनात्मक एवं विचारात्मक चेतना के मानस पटल पर अन्नत तरंग उमड़ने लगती है। उसमें से कुछ बिंदुओं को संगठित कर अपनी रचना में पात्र सृष्टि करता है।"[1]

हिंदी कथा साहित्य में पिछले दशकों से महिला कहानीकारों का प्रवाह शक्ति रूप में हुआ उन्होंने लेखन में अपनी पहचान बनाई और स्त्रियों के दुख, दर्द, पीड़ा को व्यक्त किया। स्त्री जीवन की समस्याओं को लेकर विद्रोह हुआ तथा नारी विमर्श और दलित विमर्श पर जोरदार चर्चा होने लगी। चित्रा मुद्गल के अनुसार "स्त्री विमर्श और दलित विमर्श योनि विमर्श मात्र रह गए हैं।" [2]

स्त्री चेतना केवल स्त्री मुक्ति का आंदोलन ही नहीं है बल्कि यह एक बौद्धिक ,मानसिक और भावनात्मक स्थिति है जहां स्त्री अपने जीवन, अपने शरीर और निर्णय पर अधिकार प्राप्त करती है। यह आंदोलन पुरुष विरोधी नहीं है बल्कि समानता और आत्मसम्मान की मांग है। 1970 के दशक के बाद के हिंदी साहित्य में नारी विमर्श ने गति पकड़ी। यह समय स्त्री की आत्म सजगता और उसकी पहचान के संघर्ष का समय था। चित्रा मुद्गल इस दौर की उन महत्वपूर्ण लेखिकाओं में से है जिन्होंने स्त्री चेतना को सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दोनों सत्रों पर व्याख्यायित किया।चित्रा मुद्गल ने अपने कथा साहित्य में नारी जीवन के संघर्ष, रोमांस, स्त्री - पुरुष संबंधों में बदलाव आदि को चित्रित किया है। यह विचार उनकी समस्त रचनाओं में व्याप्त है कि स्त्री केवल एक देह ही नहीं है अपितु उसके पास भी अपनी बुद्धि, संवेदना, तर्क शक्ति और विवेक है जो उसे एक स्वतंत्र सत्ता बनाते हैं। "स्त्री केवल अपनी देह भर नहीं है। उसके पास अपना समूचा व्यक्तित्त्व है जिसमें उसकी बुद्धि, उसकी संवेदना, उसकी तर्क शक्ति, उसकी निर्णाय क्षमता, उसका विवेक, उसका मूल्य बोध सब कुछ अपना निजी हो सकता है। बिना किसी दबाव या अदिक्रमण के स्त्री इस सब का विकास करें और स्वयं को एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में गिनवा सके, यही स्त्री विमर्श का अभीष्ट हो सकता है।"[2]

एक जमीन अपनी चित्रा मुद्गल का एक स्त्री चेतना को जागृत करने वाला उपन्यास है तथा स्त्री के आत्मसम्मान और आत्मनिर्णय की गाथा है। उपन्यास की नायिका अंकित एक शिक्षित, संघर्षशील लड़की है जो पितृसत्तात्मक मानसिकता के विरुद्ध खड़ी है वह अपने पति सुधांशु के उस व्यवहार को स्वीकार नहीं कर पाती जिसमें पत्नी को केवल नौकरानी, गृहणी या सेविका माना जाता है। जब अंकिता को महसूस होता है कि उसका पति उसे स्वतंत्र व्यक्ति न मानकर उसे सिर्फ घर के नौकरानी मानता है तब वह त्याग के मार्ग को अपनाती है और स्वयं के श्रम से जीवनयापन करती है। अंकित का यह निर्णय स्त्री चेतना का प्रथम चरण है जो अपने अस्तित्व के लिए स्वयं निर्णय लेने की क्षमता को जागृत करता है। अंकित का यह विद्रोह केवल पारिवारिक ही नहीं बल्कि सामाजिक परंपराओं के विरुद्ध भी है। यहां चित्रा मुद्गल ने स्त्री को परंपरा की बेड़ियों से बाहर निकलने और अपनी पहचान बनाने की प्रेरणा दी है। "स्त्री मुक्ति उसके मस्तिष्क की पहचान से जुड़ी है। जिस दिन मान लिया जाएगा कि समाज के विकास में स्त्री की मुकम्मल भागीदारी के बिना सर्वांगीण विकास संभव नहीं है, उसे दिन समझा जाएगा कि स्त्री स्वतंत्र है। मुक्त है।"[4]

आवाँ चित्रा मुद्गल का सर्वाधिक सशक्त और चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका नमिता के माध्यम से लेखिका ने स्त्री के अंदर उठने वाली चेतना, सामाजिक असमानताओं और यौन शोषण की पीड़ा को गहराई से चित्रित किया है। यौन शोषण की घटना का वर्णन करते हुए चित्रा ने अपने उपन्यास आवाँ में नामित और उसकी मित्र स्मिता की यौन शोषण की घटना का वर्णन है। बच्ची नमिता एक दिन मौसी के कहने पर नाश्ता लेकर मौसा जी के कमरे में पहुंची तो मौसा उसे फुसलाते हुए अजीब तरीके से पेश आए। "सहसा वह उसकी अप्रत्याशित हरकत से बैचेन हो आई। बातें करते हुए मौसा जी के हाथों ने उसकी चड्डी का नाड़ा खोल दिया और उसकी पेशाब में उंगली डालते हुए"[5] नमिता की मित्र स्मिता अपने पिता द्वारा शोषण का शिकार बनती है और गर्भवती हो जाती है और मानसिक रोग का शिकार हो जाती है। स्मिता की बात सुनकर नमिता सकते में आ गई थी, कि "पिता के लिए कोई पुत्री देह हो सकती है।"[6]

नमिता अपने परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ने के कारण और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण मॉडलिंग करती है, लेकिन वहाँ भी उसे पुरुष की अमानवीय दृष्टि और शोषण का सामना करना पड़ता है। संजय कनोई द्वारा नमिता के साथ किया गया छल स्त्री देह के बाजारीकरण का प्रतीक है। यहां संजय स्त्री को सिर्फ बच्चे पैदा करने की मशीन समझता है और नमिता से प्रेम का ढोंग कर बच्चा पैदा कर अपना पुरूष्य सिद्ध करना चाहता था। नमिता का यह अनुभव उसे अंदर तक तोड़ जरूर देता है, परंतु यही घटना उसके अंदर चेतना का संचार करती है। वह समझती है कि स्त्री को केवल शरीर नहीं, बल्कि विवेक और आत्मसम्मान की सत्ता के रूप में जीना होगा।

चित्रा मुद्गल ने इस उपन्यास में 'कोख के शोषण' की समस्या को गहरे सामाजिक संदर्भ में उठाया है। संजय द्वारा नमिता की कोख को खरीदा जाता है जो आधुनिक पूंजीवादी समाज में स्त्री देह को वस्तुकरण का प्रतीक बनाता है। नमिता द्वारा जब इसका विरोध किया जाता है, तो वह सिर्फ अपनी ही नहीं, अपितु समूची स्त्री जाति की आवाज़ बन जाती है।

गिलिगडु उपन्यास में लेखिका ने ग्रामीण और निम्नवर्गीय स्त्रियों के जीवन को स्वर दिया है। नायिका सुनगुनिया अशिक्षित होते हुए भी अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है। जब उसका जेठ उसकी संपत्ति हड़पने और उसे एक वृद्ध व्यक्ति से विवाह के लिए मजबूर करता है, तो वह साहसपूर्वक घर छोड़ देती है। सुनगुनिया का यह कदम उस स्त्री चेतना का उदाहरण है जो समाज की रूढ़ियों के आगे झुकने से इंकार करती है। यहाँ लेखिका यह दिखाती हैं कि चेतना केवल शिक्षित या शहरी स्त्रियों में नहीं, बल्कि ग्रामीण और वंचित स्त्रियों में भी जाग रही है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

माधवी और कन्नगी उपन्यासों में स्त्री शोषण, आर्थिक, सामाजिक संघर्ष, अस्तित्व की पहचान, पारिवारिक मूल्यों का विरोध, अन्याय और विडंबना आदि को दर्शाया गया है। इन उपन्यासों में चित्र मुद्गल ने पौराणिक नारी के द्वारा आधुनिक नारी की न्यायप्रियता और आत्मसंघर्ष को प्रस्तुत करती है। माधुरी उपन्यास की नायिका और नैतिकता की रक्षा हेतु पुरुष सत्ता को चुनौती देती है। वहीं कन्नगी उपन्यास स्त्री की प्रतिरोधी चेतन, सामाजिक न्याय को प्रतीक बना देता है। इन पत्रों के माध्यम से चित्रा मुद्गल बताना चाहती है कि स्त्री की चेतना केवल निजी स्तर तक ही सीमित नहीं बल्कि समाज और संस्कृति के पुनर्गठन में भी सहायक है।

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में स्त्री चेतना व्यक्तिगत मुक्ति का साधन ही नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है। उसके अनुसार जब तक स्त्री को समान भागीदारी नहीं मिलेगी तब तक समाज का वास्तविक विकास संभव ही नहीं है। उनके उपन्यासों की नायिकाएं अपनी चेतना के माध्यम से उस समाज का विरोध करती है जो उन्हें देह और कर्तव्य तक सीमित करता है। वह शिक्षा, आत्मसंघर्ष, आत्मचेतना और विचारों के बल पर अपनी पहचान बनती है । यही चेतन आगे चलकर सामाजिक परिवर्तन का कारण बनती है। चित्रा मुद्गल के उपन्यासों की नारी पात्र जैसे नमिता, अंकिता और सुनगुनिया आदि सभी परिस्थितियों से डर कर भागती नहीं बल्कि उनका सामना करती हैं। वे आत्मनिर्णय लेने की क्षमता रखती हैं। इनकी नारी पात्रों की चेतना अनुभवजन्य चेतना, आत्मचेतना, प्रतिरोध चेतना, सृजनात्मक चेतना चार स्तरों पर विकसित होती है और यही चार स्तर स्त्री चेतना के विकास की संपूर्ण प्रक्रिया को रेखांकित करने में सहायक है।

हिंदी कथा साहित्य में चित्रा मुद्गल का स्थान उन महत्वपूर्ण लेखिकाओं में है जिन्होंने स्त्री चेतना को सामाजिक और मानवीय दोनों धरातलों पर देखा और अभिव्यक्त किया है। उन्होंने स्त्री को सहानुभूति की पात्र के रूप में ही नहीं बल्कि परिवर्तन की संवाहक के रूप में भी प्रस्तुत किया। उनके उपन्यासों में स्त्री चेतना का विकास स्त्री के आत्मानुभव, आत्मनिर्णय, आत्म चेतना, प्रतिरोध चेतना आदि से जुड़ा है। वह परंपरागत मर्यादाओं को तोड़कर बाहर निकलती है और अपने अस्तित्व के मूल्य को पहचानती है। चित्रा मुद्गल की दृष्टि में 'स्त्री की स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंद आचरण ही नहीं बल्कि विवेकपूर्ण निर्णय की क्षमता है।' उनकी रचनाएं स्त्री विमर्श को देह से नहीं बल्कि विचार से जोड़ती है। इस प्रकार चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य नारी विमर्श को एक गहराई, गंभीरता और सामाजिक दिशा प्रदान करता है।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल ने हिंदी उपन्यास साहित्य में 20वीं सदी के अंतिम दशक में प्रवेश किया और उन्होंने अपने उपन्यासों में आज के आदमी और समाज के विभिन्न वर्ग समूहों को उनकी वास्तविक स्थितियों के साथ चित्रित किया है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास स्त्री चेतना के विकास का जीवंत दस्तावेज हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में एकांगी दृष्टिकोण को न अपनाते हुए। अपने पत्रों को जीवन की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्णय की राह पर चलते दिखाया है। उनकी नारी पात्र पुरुष सत्ता को चुनौती देते हुए अपने अस्तित्व का बोध कराती है। उनके उपन्यासों में स्त्री चेतना का विकास संवेदना से प्रतिरोध और प्रतिरोध से आत्मनिर्णय तक का मार्ग तय करता है। यही स्त्री चेतना की परिपूर्णता है जहां स्त्री अपनी आत्मा, देह और मस्तिष्क तीनों स्तरों पर स्वतंत्र है। चित्रा मुद्गल के साहित्य ने हिंदी कथा संसार की स्त्री दृष्टि को नई पहचान प्रदान की है। उनके उपन्यासों में आज भी यह प्रश्न उठाता है कि क्या स्त्री की मुक्ति केवल शब्दों तक सीमित है या वह वास्तव में समाज की सोच में स्थान पा चुकी है? उनकी रचनाएं इस प्रश्न का उत्तर खोजने की दिशा में प्रेरणा प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डांठ माघवी बागी, देवेश ठाकर के उपन्यासों में नारी, पृष्ठ संख्या 46-47
2. मुद्गल, चित्रा, मेरी साक्षात्कार, (सबसे बड़ी कसौटी मेरे पाठक है) किताब घर प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 113
3. वही, पृष्ठ संख्या 113
4. मुद्गल, चित्रा, मेरे साक्षात्कार (सुषमा जुगरान ध्यानी से बातचीत) किताब घर प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 67
5. मुद्गल, चित्रा, आवां, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली,पृष्ठ संख्या- 302
6. वही पृष्ठ संख्या-44